REVIEW OF RESEARCH

उदय प्रकाश की कहानियों में समाज और व्यवस्था

श्री.अनिल शिवाजी झोळ
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, अण्णासाहेब मगर महाविद्यालय, हडपसर,
पुणे. (महाराष्ट्र)

• सारांश :—

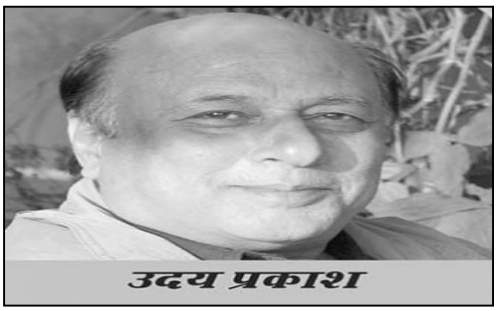
उदय प्रकाश

उदय प्रकाश ने अपने समय के समाज और व्यवस्था का यथार्थ चित्रण किया है। 'मोहनदास' कहानी के नायक मोहनदास को लंबे समय तक रोज़गार नहीं मिलता। ओरियंटल कोल माइंस में चुने हुए लोगों में उसका पहला नंबर था। वह अपने प्रमाण—पत्र वगैरा वहाँ जमा कर आता है। लेकिन वहाँ से उसके लिए बुलावा नहीं आता। उसे समझता है कि बिछिया टोला का बिसनाथ मोहनदास बनकर कोल माइंस में काम कर रहा है। मोहनदास माइंस जाता है और मार खाकर लौट आता है। फिर वह जी.एम. तक पहुँचने का सोर्स लगाता है। इंक्वायरी बैठाता है। बिसनाथ कोर्ट में साबित कर देता है कि वही मोहनदास है। मोहनदास को समाप्त करने मे तुला है, वह हमारे समय का सच है। हमारी वर्तमान सामाजिक — राजनैतिक व्यवस्था इन्हीं पंक्तियों में कैद है। चुनाव होते हैं सरकारे बदलती हैं पर वह भ्रष्ट ढाँचा यथावत बना रहता है जो वंचित समाज के उत्थान के लिए बनी योजनाओं से अपनी जेबें भरता है।

उदय प्रकाश समकालीन कहानी के एक महत्वपूर्ण कहानीकार है। समकालीन कहानी साहित्य परिमाण की दृष्टि से इतना विशाल है कि इसके प्रत्येक पहलू, प्रत्येक अंग तथा प्रत्येक प्रवृत्ति के विश्लेषण तथा विवेचन के लिए अधिक परिश्रम, समय तथा अनुसंधान की आवश्यकता है। हिंदी कहानी साहित्य का इतिहास सौ वर्ष से अधिक का है। हिंदी कहानी उत्तरोत्तर प्रगति की ओर अग्रसर हो रही है, नए—नए कीर्तिमान स्थापित कर रही है। हिंदी कहानी में प्रेमचंद के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। उन्होंने तो हिंदी कहानी के लिए जो भूमि तैयार की। उदय प्रकाश हिंदी के समकालीन कहानी के कहानीकार के रुप में अपने समय के प्रति ईमानदार रहे हैं। उन्होंने समाज और व्यवस्था का यथार्थ चित्रण किया है। शायद एक बडे रचनाकार की यही पहचान होती है कि वह अपने समय की विडंबनाओं को परत—दर—परत उघाडता है और पाठक के सामने ऐसे प्रश्न ला खड़े करता है जो अब तक उसकी सोच का हिस्सा नहीं थे।

उदय प्रकाश की लंबी कहानी की किताब 'मोहन दास' के अंतिम आवरण पृष्ठ में पाकिस्तान के 'आज' पत्र के संपादक अजमल कमाल का वक्तव्य छपा है, 'पाकिस्तान में वह सभी कुछ है, जो कुछ हिंदुस्तान में है... सिर्फ उदय प्रकाश जैसे अफ़सानानिगार को छोडकर। उनका यह वक्तव्य उन सब के लिए गर्व करने लायक है, जो उदय प्रकाश को हिंदी का बड़ा कहानीकार मानते रहे हैं। लेकिन मैं उदय प्रकाश को बड़ा कहानीकार नहीं मानता। जिस प्रकार से नई कहानी का परिदृश्य राजेंद्र यादव, कमलेश्वर, मोहन राकेश, निर्मल वर्मा, अमरकांत तथा भीष्म साहनी से मिलकर पूरा होता है। उसी प्रकार उदय प्रकाश के साथ हमें संजीव, शिवमूर्ति, महेश कटारे और अखिलेश आदि लेखकों का नाम लेना होगा।

हम उन्हें नज़रअंदाज नहीं कर सकते। वहीं इससे भी इनकार नहीं किया जा सकता है कि इन सबके बीच अपनी कहन और शैली की विशिष्टता के कारण उदय प्रकाश सबसे अलग नज़र आते है। शायद यही कारण है कि उनका प्रभाव आज हिंदी कहानी मैं सक्रिय पचास से अधिक युवा लेखकों में सब से अधिक दिखाई देता है।

'मोहनदास' उदय प्रकाश की चर्चित कहानी है। यह कहानी इतनी चर्चित एवं प्रभावशाली है कि साहित्य अकादमी ने अपने इतिहास में पहली बार किसी एक कहानी को अपने सम्मान का आधार बनाया है। कहानी की शुरुआत में ही लेखक अपने इरादे से पाठकों को अवगत करा देता है "मै हमेशा की ही तरह, कहानी की आड़ में, आपको फिर से अपने समय और समाज की एक असली ज़िंदगी का ब्यौर देने बैठा हूँ।"[१]

कहानी का नायक मोहनदास दलित समाज से है और कबीर पंथी है। उसने फर्स्ट डिवीजन में बी. ए. पास किया था। लेकिन उसे लंबे समय तक रोज़गार नहीं मिलता। ओरियंटल कोल माइंस उसके जीवन में उम्मीद की किरण बनकर आती है। चुने हुए लोगों में उसका पहला नंबर था। वह अपने प्रमाण—पत्र वगैरा वहॉ जमा कर आता है। लेकिन वहॉ से उसके लिए बुलावा नहीं आता। वह खेती—बाड़ी और सूपा — चटाई बुनने के काम में लगा रहता है। एक दिन उसका साढू गोपाल दास आकर बताता है कि बिछिया टोला का बिसनाथ मोहनदास बनकर कोल माइंस में काम कर रहा है। मोहनदास माइंस जाता है और मार खाकर लौट आता है। फिर वह जी.एम. तक पहुँचने का सोर्स लगाता है। जी.एम. इंक्वायरी बैठाता है। बिसनाथ अपने को मोहनदास साबित कर देता है। मोहनदास विक्षिप्त हो जाता है।

बिसनाथ कोर्ट में साबित कर देता है कि वही मोहनदास है। सब निराश हो जाते हे। न्यायिक दंडाधिकारी गजानन माधव मुक्बिोध अपनी विशेष पावर का प्रयोग करते हुए सीक्रेट ज्यूडीशियल इंक्वायरी बिठाते है। एस. पी. शमशेर बहादुर की सहायता से ताबड़तोप छापे मारते हैं। लगता है मोहनदास जीत जाएगा। लेकिन मुक्तिबोध का तबादला हो जाता है। तब बिसनाथ की जमानत हो जाती है। वह इंसपेक्टर विजय तिवारी तथा थाने के सिपाहियों को खिला — पिलाकर मोहनदास को पीट — पीटकर उसके हाथ—पैर तुड़वा डालता है। "जिसे बनना हो बन जाए मोहनदास। मैं नहीं हूं मोहनदास। मैंने कभी कहीं से बी.ए. नहीं किया। कभी टॉप नहीं किया। मैं कभी किसी नौकरी के लायक नहीं रहा। बस मुझे चैन से ज़िंदा रहने दिया जाय।"[२]

मोहनदास को समाप्त करने मे तुला है, वह हमारे समय का सच है। उदय प्रकाश अपने समय को व्याख्यायित करने के लिए कहानी का जो ढॉचा गढ़ते हैं वह नया है, अलक हटकर है। अलग हट कर इसलिए है क्योंकि उनके सरोकर अलग हैं। मतलब अलग तरीके सें हाशिए की दुनिया की तकलीफों को समझने से हैं। विकसित भारत की जो तस्वीर हमारे सामने है वह वास्तविक नहीं बल्कि भ्रामक तस्वीर है। तह तक जा कर चीजों को समझना और उस त्रासद संसार में पाठक को ले जाना उदय प्रकाश को कहानीकार के रुप में विशिष्ट बनाता है। उदय प्रकाश एक जगह कहते हैं — "ऐसा समय, जिसमें अगर ग़ौर से देखें तो जो भी सत्ता में है, उसमें से हर कोई एक—दूसरे का क्लोन है। हर कोई एक जैसी ब्रांड का उपभोक्ता है।"[३]

हमारी वर्तमान सामाजिक — राजनैतिक व्यवस्था इन्हीं पंक्तियों में कैद है। चुनाव होते हैं सरकारे बदलती हैं पर वह भ्रष्ट ढॉचा यथावत बना रहता है जो वंचित समाज के उत्थान के लिए बनी योजनाओं से अपनी जेबें भरता है। ठगी का यह धंधा यूँ ही चलता रहता है। ऐसे में अपवादों को छोड़ कर हर कोई दूसरे का क्लोन नहीं है, तो क्या है? मोहनदास कहानी में व्यवस्था के चरित्र के कई कोण सामने आते हैं। हम जानते हैं रिश्वत लेना और देना दोनों ही जुर्म हैं। किंतु दरिद्रता और भ्रष्ट व्यवस्था आम आदमी को अंतत: इसी राह पर धकेल सकती है। वह रिश्वत भले ही कभी न ले पर रिश्वत देने के लिए उसे मज़बूर कर सकती है। हर तरफ से हताश हो कर एक जगह मोहनदास के मन में ऐसे ही भाव उभरते हैं —"उसके मन के सबसे भीतर कोने ने अच्छी तरह से जान लिया था कि उसके जीवन के ठूंठ की किसी गॉठ से जो नए कोंपल के कल्ले आश्चर्य की तरह फूटने वाले थे, आकाश के देवताओं ने उसकी विषदा जानकर, उसके लिए दया की जो बूँदे टपकाई थी, उन्हें दुर्भाग्य और भ्रष्टाचार की लू ने

झुलसा डाला है। अब कोई उम्मीद कहीं से नहीं बची है। अगर उसके पास कुछ नकदी जमा पूँजी होती तो किसी दलाल से मिल कर रुपये ऊपर तक पहुंचा कर वह यह नौकरी पा सकता था।"[४]

मोहनदास की स्वयं को मोहनदास प्रमाणित करने की जद्दोजहद का त्रासद अंत उसके अन्याय के समक्ष आत्मसमर्पण से होता है। एक ईमानदार संघर्ष की परिणति। ऐसी व्यवस्था के खिलाफ संघर्ष यहाँ अपराधियों और सत्ताधारियों में गहरी साँठ — गाँठ है, जहाँ उसका साथ देने वाले चंद लोगों को भी या तो खरीद लिया जाता है या फिर हाशिए पर धकेल दिया जाता है। 'मोहनदास', 'पाल गोमरा का स्कूटर' तथा 'और अंत मे प्रार्थना' ऐसी व्यवस्था का छिपा हुआ अमानवीय चेहरा दिखाने वाली कहानियाँ हैं।

'और अंत में प्रार्थना' कहानी में डॉ. वाकणकर का तबादला होता है। जैसे कि ईमानदार और बिना सोर्स के व्यक्ति का अबसर हो जाया करता है। इस छोटे से शहर में एक दिन छोटी सी घटना घटती है जो आगे चल कर न केवल कोतमा जैसे कस्बे में तनाव पैदा करती है बल्कि डॉ. वाकणकर के जीवन में भी ऐसा सवाल खड़ा करती है जिसका उत्तर वह अपने जीवन की आहुति देकर चुकाते हैं। घटनाएं कुछ इस तरह घटती हैं — एक कॉलेज के दो छात्रों द्वारा एक ही कंपनी का जूता अलग — अलग कीमत पर दो दुकानदारों से खरीदा जाना। दोनों कि कीमत में अंतर के चलते महंगा जूता बेचने वाले दुकानदार से दोनों लड़कों कीझड़प, हाथापाई। दुकानदारों का इकट्ठे होकर लडकों कों पीटना और पुलिस स्टेशन ले जाना। बात बढ़ते—बढ़ते छात्रो द्वारा एस.डी.एम. और थाने के घेराव — पथराव तक जा पहुंचती है। एस.डी.एम. अपनी कार बचाने के चक्कर में गोली चलाने का आदेश दे देता है जिसमें एक छात्र की मौत हो जाती है जो कि बद्किस्मती से अल्पसंख्याक निकलता है।

यहीं से सांप्रदायिक राजनीति शुरु होती है और प्रशासन से लेकर नेता एवं अपराधी तक डॉ. वाकणकर पर झूठी पोस्टमार्टम रिपोर्ट लिखने का दबाव डालते हैं। डॉ. वाकणकर पोस्टमार्टम पैनल में जाने से ही बचना चाहते है किंतु इस कदर घिर जाते हैं कि रिपोर्ट लिखने के लिए तैयार होना पड़ता है। निर्णायक क्षणों में जो अटल सत्य उनके अंदर उभरता है वह सच को लिखने का है। और वह एस.पी. के सामने सच लिखते हैं — "सेरेब्रल हेड इंजुरी, प्रण्ड फैटल, काज्ड बाई दी गन शाट..."[५]

इस दौरान उच्च रक्तचाप के रोगी डॉ. वाकणकर मानसिक उत्पीड़न से गुजरते हैं तथा ब्रेन हेमरेज़ के शिकार हो जाते हैं। यह सच की कीमत है और सच की जीत भी। कहानी की सबसे महत्वपूर्ण घटना डॉ. वाकणकर का व्यवस्था के आगे झुक जाना नहीं बल्कि सच को जिंदा रखने के लिए अड़िग रहना है। बिना डरे सच बोलना तथा व्यवस्था को झकझोरना है चाहे वह आदिवासियों में फैली महामारी के निदान के लिए ऑखे मूंदे बैठे जिलाधीश को झकझोरना हो या पोस्टमार्टम की सच्ची रिपोर्ट लिखना ।

उदय प्रकाश की कहानियाँ अपने समय को इतिहास के आईनें में देखती हैं। आज़ादी के बाद जहाँ हम खड़े हैं वहाँ स्वतंत्रता जैसे शब्द कितने प्रासंगिक है। देश की आबादी का कितना हिस्सा स्वतंत्रता को भोग रहा है। 'पाल गोमरा का स्कूटर' कहानी भी कुछ असुविधाजनक सवाल हमारें सामने रखती है। यहाँ स्कूटर स्वयं हाशिए पर छूट चुके व्यक्ति का प्रतीक है। यह कहानी एक बहुत बड़ा सवाल उठाती है, क्या हाशिए पर छूट चुका समाज कुछ लुप्त हो चुकी पक्षियों और जानवरों की प्रजातियों की तरह लुप्त हो जाएगा। स्कूटर एक्सीडेंट में मारे गए विक्षिप्त हो चुके पाल गोमरा के स्कूटर से जो डायरी निकलती है उसमें लिखी कविता की पंक्तियाँ तो इसी ओर इशारा करती है —

'जो प्रजातियाँ लुप्त हो रही हैं
यथार्थ मिटा रहा है जिनका अस्तित्व
हो सके तो हम उनकी हत्या में न हों शामिल
और संभव हो तो संभालकर रख लें
उनके चित्र, ये चित्र अतीत के स्मृति चिह्न हैं...'[६]

ईमानदारी और स्वाभिमान जैसे मूल्य क्या लुप्त प्रजातियों की नियति को प्राप्त हो जाएँगे। यही सवाल हमारे कठिन समय में उदय प्रकाश की कहानियाँ पैदा करती है।

चुनाव के दिनों में गाडियों में करोडों रुपये पकड़े जाने के जो समाचार हम प्रतिदिन सुन रहे है। 'दिल्ली की दीवार' एक कहानी है। व्यवस्था के इस पतित चेहरे की तस्वीर हमें दिखाती है। इस कहानी

में सफाई कर्मचारी के हाथ संयोगवश बाबा आदम का खज़ाना लग जाता है। भ्रष्टाचार का आलम यह है कि पैसा छुपाने के लिए अलमारियॉ और तिजोरियॉ छोटी पड़ती जा रही हैं। तो दीवारों में चिनवा दी गई है जहॉ अनगिनत पैसा ठूँस दिया जाता है। भ्रष्टाचार का स्वरुप भी इतना विकराल हुआ कि आम आदमी की समझ से बाहर चला गया ऊपर से लेकर नीचे तक इस व्यवस्था के स्वरुप को उदय प्रकाश की कहानियॉ उधेंड़ती है। इस प्रकार उदय प्रकाश के बहाने वर्तमान हिंदी कहानियों में समाज और व्यवस्था को देखा जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ :—

१. मेहनदास,उदय प्रकाश, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : २००६ पृष्ठ संख्या — १२
२. वही, पृ. ८५
३. वही, पृ. २९
४. वही, पृ. २१
५. और अंतमें प्रार्थना, उदय प्रकाश, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : २००६ पृ. २००
६. पाल गोमरा का स्कूटर, उदय प्रकाश, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण : २००६ पृ. ७६